भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 3568

उत्तर देने की तारीख : 8 अगस्त, 2022

कला संस्कृति विकास योजना

3568. श्रीमती नुसरत जहां :

क्या **संस्कृति मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई) का कार्यान्वयन कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) केएसवीवाई के उद्देश्य और लक्ष्य क्या हैं;

(ग) पिछले तीन वर्षों और चालू वर्ष के दौरान कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले सांस्कृतिक संगठनों की वर्ष-वार और संगठन-वार संख्या कितनी है और उनका ब्यौरा क्या है; और

(घ) देश में कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा क्या अन्य कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

(जी. किशन रेड्डी)

संस्कृति, पर्यटन एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री

(क) और (ख) : जी, हां। संस्कृति मंत्रालय कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई) कार्यान्वित कर रहा है। केएसवीवाई समावेशी स्कीम है जिसमें सांस्कृतिक संगठनों/व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए कई स्कीमें सम्मिलित हैं। केएसवीवाई के अंतर्गत स्कीमों के लक्ष्य और उद्देश्य **अनुलग्नक-I** पर दिए गए हैं।

(ग) : विगत तीन वर्षों और चालू वर्ष के दौरान कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई) के विभिन्न घटकों के तहत इस मंत्रालय से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले संगठनों की वर्ष-वार संख्या **अनुलग्नक-II** पर दी गई है।

(घ) : संस्कृति मंत्रालय ने संबद्ध, अधीनस्थ और स्वायत्त संगठनों के माध्यम से अपने अधिदेश अर्थात सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण तथा मूर्त और अमूर्त कला का संवर्धन आदि को प्राप्त करने हेतु विभिन्न आवश्यक कदम उठाए हैं। विगत तीन वर्षों के दौरान देश में कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख नए कार्यक्रमों का विवरण **अनुलग्नक-III** पर दिया गया है।

अनुलग्नक-I

कला संस्कृति विकास योजना के संबंध में दिनांक 8 अगस्त, 2022 को पूछे गए लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 3568 के भाग (क) और (ख) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक

कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई) :

कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई) संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत देश में कला और संस्कृति के संवर्धन हेतु एक समावेशी स्कीम है। केएसवीवाई में निम्नलिखित उप-स्कीमें हैं जिसके माध्यम से सांस्कृतिक संगठनों/व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है :

1. गुरू-शिष्य परंपरा के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता (रेपर्टरी अनुदान)

2. कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता स्कीम

3. कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति की स्कीम

4. सांस्कृतिक अवसरंचना के निर्माण के अंतर्गत टैगोर सांस्कृतिक परिसरों (टीसीसी) के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता

5. वयोवृद्ध कलाकारों हेतु वित्तीय सहायता

6. राष्ट्रीय गांधी विरासत स्थल मिशन

7. **राष्ट्रीय पुरस्कार स्कीम**

8. सेवा भोज योजना

कला संस्कृति विकास योजना के अंतर्गत उप-स्कीमों और उनके उप-घटकों का विवरण :-

1. **गुरू-शिष्य परंपरा के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता (रेपर्टरी अनुदान)**

इस स्कीम का उद्देश्य नाट्य समूहों, रंगमंच समूहों, संगीत मंडलियों, बाल रंगमंच आदि जैसे मंचकला कार्यकलापों की सभी शैलियों तथा गुरु-शिष्य परंपरा के अनुरूप नियमित आधार पर कलाकारों को उनके संबंधित गुरु द्वारा प्रशिक्षण देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। स्कीम के अनुसार रंगमंच क्षेत्र में 1 गुरु और अधिकतम 18 शिष्यों को सहायता और संगीत नृत्य क्षेत्र में 01 गुरू और अधिकतम 10 शिष्यों को सहायता प्रदान की जाती है।

सहायता की राशि- गुरु के लिए 15000/- रु. प्रतिमाह, शिष्य के लिए 2000-10000/- रुपए प्रतिमाह (कलाकारों की आयु पर निर्भर)

2. कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता स्कीम: इस स्कीम में 08 घटक शामिल हैं। स्कीम घटकों का नाम और विवरण निम्नानुसार है:

i. **राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता**

इस स्कीम घटक का उद्देश्य वृहत पैमाने पर राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए सहायता प्रदान करना है। इस स्कीम के अंतर्गत सहायता की मात्रा 5 करोड़ रुपए है।

ii. **सांस्कृतिक समारोह और निर्माण अनुदान (सीएफपीजी)**

इस स्कीम का उद्देश्य गैर-सरकारी संगठनों/सोसाइटियों/न्यासों/विश्वविद्यालयों आदि को संगोष्ठियां, सम्मेलन, शोध कार्य, कार्यशालाएं, महोत्सव, प्रदर्शनियां, विचार-गोष्ठियां, नृत्य निर्माण, नाटक-रंगमंच, संगीत आदि के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। सीएफपीजी के अंतर्गत 5 लाख रुपए का अधिकतम अनुदान प्रदान किया जाता है (विशेष परिस्थितियों में 20 लाख रुपए)।

iii. **हिमालय की सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता**

इस स्कीम घटक का उद्देश्य शोध, प्रशिक्षण तथा दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार-प्रसार द्वारा हिमालय की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना एवं परिरक्षित करना है। हिमालयी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्यों अर्थात जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। किसी संगठन के लिए निधियन की राशि प्रति वर्ष 10.00 लाख रुपए होती है जिसे विशेष मामलों में 30.00 लाख रुपए तक बढ़ाया जा सकता है।

iv. **बौद्ध/तिब्बती संगठनों के परिरक्षण एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता**

इस स्कीम घटक के अंतर्गत बौद्ध/तिब्बती संस्कृति एवं परंपरा के प्रसार और वैज्ञानिक विकास तथा संबंधित क्षेत्रों में शोध में कार्यरत बौद्ध मठों सहित स्वैच्छिक बौद्ध/तिब्बती संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस स्कीम के अंतर्गत किसी संगठन को 30.00 लाख रुपए प्रति वर्ष तक निधियन प्रदान किया जाता है जिसे विशेष मामलों में 1.00 करोड़ रुपए तक बढ़ाया जा सकता है।

V. स्टूडियो थियेटर सहित निर्माण अनुदान हेतु वित्तीय सहायता

इस स्कीम घटक का उद्देश्य गैर सरकारी संगठनों, न्यासों, सोसाइटियों, सरकार द्वारा प्रायोजित निकायों, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों आदि को सांस्कृतिक अवसंरचना के सृजन (अर्थात स्टूडियो थियेटर, सभागार, अभ्यास कक्ष, क्लासरूम आदि) और वैद्युत, वातानुकूलन, ध्वनिकी, प्रकाश एवं ध्वनि प्रणालियों आदि जैसी सुविधाओं के प्रावधान हेतु वित्तीय सहायता करना है। इस स्कीम घटक के अंतर्गत महानगरों में 50 लाख रुपए तक की राशि और अन्य शहरों में 25 लाख रुपए तक की अधिकतम राशि प्रदान की जाती है।

vi. **संबद्ध सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता**

इस स्कीम-घटक का उद्देश्य सभी पात्र संगठनों को संबद्ध सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए दृश्य-श्रव्य अनुभव को संवर्धित करने हेतु परिसंपत्तियों के सृजन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि उन खुले/बंद क्षेत्रों/स्थानों पर नियमित आधार पर एवं महोत्सवों के दौरान लाइव प्रस्तुतियों का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया जा सके। इस स्कीम घटक के अंतर्गत, लागू शुल्कों एवं करों तथा प्रचालन एवं अनुरक्षण (ओ एंड एम) सहित सहायता की अधिकतम राशि 5 वर्षों के लिए निम्नानुसार होगी- (i) ऑडियो : 1.00 करोड़ रुपए; (ii) ऑडियो + वीडियो : 1.50 करोड़ रुपए।

vii. **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत स्कीम**

इस स्कीम का उद्देश्य यूनेस्को द्वारा मान्यता दिए गए सहित भारत की समृद्ध, विविध और विशाल अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में शामिल विभिन्न हितधारकों के प्रयासों को समर्थन देना और उन्हें सुदृढ़ बनाना है।

viii. **देशी महोत्सव और मेला**

इस योजना का उद्देश्य संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव' के लिए सहायता प्रदान करना है।

3. कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति की स्कीम : इस स्कीम में 03 घटक हैं। स्कीम का नाम और विवरण निम्नानुसार है :

i. संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने की स्कीम

विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में 25 से 40 वर्ष के आयु वर्ग (कनिष्ठ) और 40 वर्ष से अधिक आयु (वरिष्ठ) के उत्कृष्ट व्यक्तियों को प्रत्येक बैच वर्ष में सांस्कृतिक शोध के लिए 2 वर्ष की अवधि के लिए 10,000/- रुपए प्रतिमाह और 20,000/- रुपए प्रतिमाह की 400 तक अध्येतावृत्तियां (200 कनिष्ठ और 200 वरिष्ठ) प्रदान की जाती है। अध्येतावृत्ति चार बराबर छमाही किस्तों में जारी की जाती है।

ii विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों हेतु छात्रवृत्ति की स्कीम

प्रत्येक बैच वर्ष में 400 तक छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। इस स्कीम के अंतर्गत 18 से 25 वर्ष के आयु वर्ग के उत्कृष्ट प्रतिभावान युवा कलाकारों को भारतीय शास्त्रीय संगीत; भारतीय शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच, मूक अभिनय, दृश्य कला, लोक, पारंपरिक और स्वदेशी कलाओं तथा सुगम शास्त्रीय संगीत आदि के क्षेत्र में भारत में उन्नत प्रशिक्षण के लिए 2 वर्षों के लिए 5000/- रुपए प्रतिमाह की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। छात्रवृत्ति चार बराबर छमाही किस्तों में जारी की जाती है।

iii. सांस्कृतिक शोध के लिए टैगोर राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति

इस स्कीम घटक का उद्देश्य संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत विभिन्न संस्थाओं और देश में पहचान की गई अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं को सुदृढ़ बनाना और सशक्त बनाना है ताकि विद्वानों/शिक्षाविदों को प्रोत्साहित करते हुए इन संस्थाओं के साथ आपसी हित की परियोजनाओं पर स्वयं को संबद्ध कर सके। इसके अंतर्गत अधिकतम दो वर्षों की अवधि के लिए 15 तक अध्येतावृत्तियां (80,000/-रुपए प्रतिमाह + आकस्मिक भत्ता) और 25 तक छात्रवृत्तियां (50,000/-रु. प्रतिमाह + आकस्मिक भत्ता) प्रदान की जाती हैं। अध्येतावृत्ति 04 बराबर छमाही किस्तों में जारी की जाती है।

4. टैगोर सांस्कृतिक परिसरों (टीसीसी) के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता

इस स्कीम घटक का उद्देश्य मंच प्रस्तुतियों (नृत्य, नाटक और संगीत) के लिए सुविधाओं और अवसंरचना युक्त सभागार जैसे नए बड़े सांस्कृतिक स्थानों के सृजन, प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, साहित्यिक कार्यकलापों, ग्रीन रुम आदि के सृजन के लिए गैर-सरकारी संगठनों, न्यासों, सोसाइटियों, सरकार द्वारा प्रायोजित निकायों, राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के सरकारी विश्वविद्यालयों, केन्द्रीय / राज्य सरकार की एजेंसियों / निकायों, नगर निगमों, प्रतिष्ठित गैर-लाभ-अर्जक संगठनों आदि को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह स्कीम घटक मौजूदा सांस्कृतिक सुविधाओं (रबीन्द्र भवन, रंगशालाएं, बहुउद्देशीय सांस्कृतिक परिसर आदि) के जीर्णोद्धार, नवीकरण, विस्तार कार्य, परिवर्तन, स्तरोन्नयन, आधुनिकीकरण के लिए सहायता भी प्रदान करता है। इस स्कीम घटक के अंतर्गत 15 करोड़ रुपए तक की सहायता प्रदान की जाती है (विशेष परिस्थितियों में 50 करोड़ रुपए)।

5. **वयोवृद्ध कलाकारों हेतु वित्तीय सहायता**

इस स्कीम का उद्देश्य उन वयोवृद्ध कलाकारों और विद्वानों (इनकी आयु 60 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए और वार्षिक आय 48000/- रुपए प्रति वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए) को 6000/- रुपए प्रति माह की पेंशन प्रदान करना है जिन्होंने कला, साहित्य आदि के उनके

विशिष्ट क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, परन्तु अब वे अभावग्रस्त स्थितियों में जीवन यापन कर रहे हैं।

6. राष्ट्रीय गांधी विरासत स्थल मिशन

बजटीय आबंटन के अनुसार गांधी शांति पुरस्कार (जीपीपी), सांस्कृतिक सद्भाव के लिए टैगोर पुरस्कार और गांधी विरासत स्थल मिशन, कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई) के तहत आते हैं। मिशन का अधिदेश, पहचान की गई स्थलों को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करना, संरक्षाण पहलों में पर्यवेक्षण, मार्ग दर्शन और सहायता प्रदान करना, रख-रखाव या संरक्षण पहलें और गांधी से जुड़े मूर्त, साहित्यिक और दृश्य विरासत के संबंध में डेटाबेस का सृजन करना है।

7. राष्ट्रीय पुरस्कार स्कीम

अहिंसा और गांधीवादी पद्धतियों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए ''गांधी शांति पुरस्कार'' दिया जाता है। सांस्कृतिक सद्भाव के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए "टैगोर सांस्कृतिक सद्भाव पुरस्कार" दिया जाता है।

8. सेवा भोज योजना

'सेवा भोज योजना' की स्कीम के अंतर्गत धर्मार्थ/धार्मिक संस्थाओं को जनता को मुफ्त भोजन वितरित किए जाने के लिए विशिष्ट कच्ची खाद्य सामग्रियों की खरीद पर उनके द्वारा भुगतान किए गए केन्द्रीय माल एवं सेवा कर (सीजीएसटी) और केन्द्र सरकार के एकीकृत माल एवं सेवा कर (आईजीएसटी) की हिस्सेदारी की प्रतिपूर्ति भारत सरकार द्वारा वित्तीय सहायता के रूप में की जाती है। सेवा भोज योजना स्कीम के अंतर्गत गुरुद्वारा, मंदिर, धार्मिक आश्रम, मस्जिद, दरगाह, गिरजाघर, मठ, बौद्ध मठ आदि जैसे धर्मार्थ/धार्मिक संस्थाओं द्वारा वितरित किए जाने वाले मुफ्त 'प्रसाद' या मुफ्त भोजन या मुफ्त 'लंगर'/'भंडारा' (सामुदायिक रसोई) आदि शामिल हैं।

अनुलग्नक-II

कला संस्कृति विकास योजना के संबंध में दिनांक 08.08.2022 को पूछे गए लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 3568 के भाग (ग) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक

क्र. सं.	स्कीम/स्कीम घटकों के नाम	वित्तीय वर्ष							
		2019-2020		2020-2021		2021-2022		2022-2023 (अब तक)	
		संगठनों / लाभार्थियों की सं.	संवितरित राशि (लाख रु. में)	संगठनों / लाभार्थियों की सं.	संवितरित राशि (लाख रु. में)	संगठनों / लाभार्थियों की सं.	संवितरित राशि (लाख रु. में)	संगठनों/ लाभार्थियों की सं.	संवितरित राशि (लाख रु. में)
1.	गुरू-शिष्य परंपरा के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता (रेपर्टरी अनुदान)	574	3995.74	529	3480.15	573	4248.58	406	2739.01
2.	राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता	8	701.03	6	930.46	6	758.24	5	343.49
3.	सांस्कृतिक समारोह और निर्माण अनुदान (सीएफपीजी)	975	1199.35	1468	1651.9	1615	2331.00	1253	2074.00
4.	हिमालय की सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता	96	229.95	128	336.00	203	473.97	66	131.00
5.	बौद्ध/तिब्बती संगठनों के परिरक्षण एवं विकास के लिए वित्तीय सहायता	142	704.97	276	1607.99	36	2251.17	70	284.66
6.	स्टूडियो थियेटर सहित निर्माण अनुदान हेतु वित्तीय सहायता	26	273.00	29	193.46	22	133.04	10	71.12
7.	संबद्ध सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता	20	754.00	-	-	-	-	-	-

8.	टैगोर सांस्कृतिक परिसरों (टीसीसी) के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता	4	1757.00	1	596.00	2	349.02	-	-
9.	संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने की स्कीम	974	832.20	982	888.60	346	509.00	534	973.00
10.	विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों हेतु छात्रवृत्ति की स्कीम	1086	325.80	1265	379.50	1206	390.00	-	-
11.	सांस्कृतिक शोध के लिए टैगोर राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति	5	20.73	7	28.25	7	52.25	-	-
12.	वयोवृद्ध कलाकारों हेतु वित्तीय सहायता	3188	1817.60	2000	871.31	3020	1542.16	366	212.70
13.	सेवा भोज योजना	03	195.90	03	169.00	03	154.93	-	-

अनुलग्नक-III

कला संस्कृति विकास योजना के संबंध में दिनांक 08.08.2022 को पूछे गए लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 3568 के भाग (घ) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक

विगत तीन वर्षों के दौरान संस्कृति मंत्रालय और उसके संगठनों के मुख्य कार्यकलाप

- वापस प्राप्त की गई पुरावशेषों के लिए पुराने किले की खाली पड़ी कोठरियों में एक गैलरी का उद्घाटन 31 अगस्त, 2019 को किया गया।
- विदेश से पुरावस्तुएं (13) वापस प्राप्त की गईं।
- इस अवधि के दौरान 17 और स्मारकों/स्थलों को शामिल किया गया है जिससे एएसआई के संरक्षण के तहत कुल स्मारकों/स्थलों की संख्या 3693 हो गई है।
- एएसआई ने बेकल किला, कासरगोड के उत्खनन में प्राप्त 40 पुरावशेषों को एनएमएमए टेम्प्लेट में प्रलेखित किया है और ऑनलाइन अपलोड किया है।
- लद्दाख में सासेर ला पास के निकट लगभग 13500-14000 फीट की ऊंचाई पर एक स्थल पर उत्खनन कार्य किया गया। पुराना किला (दिल्ली), कालीबंगन और बिंजोर (राजस्थान), लोथल और धौलावीरा (गुजरात) और सन्नति (कर्नाटक) में पुरातात्विक स्थल का विकास कार्य, भारत के बाहर कम्बोडिया, लाओस, म्यांमार और वियतनाम में संरक्षण कार्य किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, दिल्ली परिमंडल द्वारा खिड़की मस्जिद के संरक्षण कार्य के दौरान इस स्मारक के परिसर में मध्यकाल के 254 तांबे के सिक्के खोजे गए।
- स्वच्छ भारत-स्वच्छ स्मारक - एएसआई के सभी संरक्षित ऐतिहासिक स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों को पॉलिथीन मुक्त क्षेत्र घोषित किया गया है। एएसआई ने शौचालयों, हरे बगीचों, पॉलिथीन मुक्त क्षेत्र, जानकारी के लिए संकेतकों, दिव्यांगजन की सुविधा, पेयजल और कूड़ेदान के लिए प्रावधान आदि जैसी सुविधाओं संबंधी स्वच्छता मानदंडों के आधार पर सर्वोत्कृष्ट 25 आदर्श स्मारकों को रैंकबद्ध किया है। विश्व धरोहर स्थल, "रानी की वाव (गुजरात)" को देश का सबसे स्वच्छ प्रसिद्ध स्थान घोषित किया गया है।
- दिल्ली में भारत के प्रधानमंत्रियों पर संग्रहालय की नींव रखी गई। इस संग्रहालय का उद्देश्य प्रधानमंत्रियों के जीवन, कार्यों और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को विशेष रूप से प्रदर्शित करना है।

- हमारी अमूल्य धरोहर को संरक्षित करने और नागरिकों में सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने के लिए प्रीमियर संग्रहालयों द्वारा कई पहलें की गई हैं जो निम्नानुसार हैं :-
    - कोविड-19 महामारी के दौरान, भारतीय संग्रहालय, कोलकाता ने ''विश्व संस्कृतियों की कहानियां'' बैनर के तहत ऑनलाइन व्याख्यान, वर्चुअल गैलरी दौरा और प्रदर्शन के माध्यम से दर्शकों को आकर्षित किया। भारतीय संग्रहालय सोशल मीडिया हैडलों के माध्यम से 'विश्व संस्कृतियों की कहानियों के 80 एपिसोड प्रसारित किए गए और कार्यक्रमों को तीन भागों में बांटा गया - शैक्षणिक व्याख्यान, बहु-सांस्कृतिक कार्यक्रम और बच्चों एवं विशेष बच्चों के लिए कार्यक्रम।
    - राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्, कोलकाता ने संस्कृति मंत्रालय की एसपीओसीएस स्कीम के तहत पालमपुर (हिमाचल प्रदेश), गया (बिहार), कोट्टायम (केरल) और कोकराझाड़ (असम) में नए विज्ञान केंद्रों की स्थापना करने के लिए कार्य कर रहा है।
    - वर्ष 2019 से 2021 तक (i) शिलांग विज्ञान केंद्र, शिलांग (मेघालय); (ii) गोवा विज्ञान केंद्र, पणजी (गोवा); (iii) जिला विज्ञान केंद्र, पुरूलिया (पश्चिम बंगाल); और (iv) क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, कोयंबत्तूर (तमिलनाडु) में नए 04 (चार) नवाचार केंद्रों का उद्घाटन किए गए और सोलापुर विज्ञान केंद्र, सोलापुर (महाराष्ट्र) और अन्ना विज्ञान केंद्र, त्रिचि (तमिलनाडु) में 02 (दो) नए नवाचार केंद्र का कार्य पूरा हो गया है और ये उद्घाटन के लिए तैयार है।
    - एनसीएसएम के तहत मौजूदा विज्ञान शहर /संग्रहालय /केंद्रों में विभिन्न विज्ञान और तकनीकी विषयों पर 03 (तीन) नई गैलरियों का उद्घाटन किए गए।
    - एनसीएसएम के तहत मौजूदा विज्ञान सिटी/संग्रहालयों /केंद्रों में 23 (तेईस) नई सुविधाएं शामिल की गईं।
    - दिनांक 12.01.2020 को विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (वीएमएच), कोलकाता ने विभिन्न पुन: निर्मित गैलरियों का उद्घाटन किया गया यथा, एंट्रेंस गैलरी (वीएमएच निर्माण कार्य को दर्शाने वाली), पोट्रेट गैलरी (वीएमएच संग्रह के नए प्रदर्शों के साथ, जिसमें अबनीन्द्रनाथ टैगोर की आइकॉनिक वाटर कलर रचना- भारत माता शामिल है), रॉयल गैलरी (वासले वेरेशजिन द्वारा एक ही कैनवास में दूसरी सबसे बड़ी ऑयल पेंटिंग-जयपुर प्रोसेशन का प्रदर्शन) और प्रथम तल गैलरी परिसर (राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली से मिनिएचर और राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् से मिनी एक्जिबिशन टॉकिंग डिवाइस का प्रदर्शन)।

- इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज ने आजाद गैलरी का अवसंरचनात्मक कार्य पूरा कर लिया है जो स्वतंत्रता के 1857 की क्रांति की विशेषताएं और नेताजी सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह और दुर्गा भाभी आदि के संबंध में वस्तुएं, दस्तावेज का प्रदर्शन करेगी।

- हमारे देश की अतुल्य परंपरा, संस्कृति, धरोहर और विविधता की भावना का कीर्तगान करने हेतु मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल आदि में राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव आयोजित किए गए। इस महोत्सव का व्यापक उद्देश्य भारतीय मूल तत्व की धरोहर को परिरक्षित, संवर्धित एवं लोकप्रिय बनाना, नई पीढ़ी को हमारी संस्कृति से पुनः जोड़ना तथा देश और पूरे विश्व के समक्ष विविधता में एकता की हमारी सॉफ्ट पावर प्रदर्शित करना है।
- जेडसीसी ने विभिन्न महोत्सव आयोजित किए यथा i) नमामि गंगे को बढ़ावा देने हेतु रस बनारस 2018 ii) चलो मन गंगा यमुना तीर-संगम, प्रयागराज पर वार्षिक महोत्सव iii) सिंहस्थ कुंभ, उज्जैन और संस्कृति कुंभ, प्रयागराज- भारत की कलाओं और शिल्पों आदि को प्रदर्शित करने हेतु 40 दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया गया। कोविड महामारी के बावजूद भी फरवरी, 2021 तक 2 राष्ट्रीय स्तर के महोत्सव, 139 क्षेत्रीय स्तर के महोत्सव, 193 लुप्तप्राय कला रूपों का पुनरुत्थान कार्य और 52 शास्त्रीय एवं लोक कलाओं को जोड़ने का कार्य किया गया है।
- संगीत नाटक अकादेमी ने उक्त अवधि के दौरान 86 महोत्सव आयोजित किए। कई नए कार्यक्रम यथा अभिव्यक्ति, अंतरंग और दीक्षा आदि सहित 372 ऑनलाइन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

- नेहरू युवा केन्द्र संगठन (एनवाईकेएस) के सहयोग से एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) के अंतर्गत, जेडसीसी द्वारा आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 1620 कलाकारों ने भाग लिया; संगीत नाटक अकादेमी द्वारा 11 व्याख्यान-सह-प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए गए; साहित्य अकादेमी द्वारा 5 पुस्तकों का अनुवाद किया गया; भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 3 कार्यकलाप (अब तक) आयोजित किए गए।

- मंत्रालय ने 'भारतीय सांस्कृतिक पोर्टल' नामक पोर्टल की संकल्पना तैयार की है जो एक ज्ञान आधारित समाज के सृजन हेतु लोगों को सशक्त बनाएगा और भावी पीढ़ी के लिए डिजिटल सामग्री का परिरक्षण सुनिश्चित करेगा। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई को इस पोर्टल- सुविधा को तैयार करने का कार्य सौंपा गया है।

- राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण के ऑनलाइन आवेदन और संसाधन प्रणाली (एनओएपीएस) के माध्यम से आवेदन पत्रों की सिंगल विंडो निकासी के लिए वेब पोर्टल तैयार किया जा रहा है।

- मंत्रालय ने 75वां स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए इस अवसर पर एक नागरिक केंद्रित वेब पोर्टल शुरू किया है। यह पोर्टल महोत्सव के भाग के रूप में आयोजित किए जा

रहे विभिन्न कार्यकलापों में मंत्रालयों/विभागों/राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों/संबंधित निकायों और नागरिकों की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए लिए एक डिजिटल प्लेटफार्म के रूप में काम करेगा।

- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) ने 'वैदिक विरासत' पोर्टल के प्रायोगिक संस्करण की शुरुआत की है।
- कई देशों में भारत महोत्सव आयोजित किए गए।
- "भारत विदेश मैत्री सांस्कृतिक सोसाइटी स्कीम" के अंतर्गत उक्त अवधि के दौरान 78 मिशनों को शामिल करते हुए 534 विदेश मैत्री सोसाइटियों को निधियां संस्वीकृत की गईं।

- गांधी विरासत स्थल मिशन ने कई परियोजनाएं आरंभ की हैं जैसे कि नोआखली (बांग्लादेश) में गांधी आश्रम ट्रस्ट का स्तरोन्नयन और आधुनिकीकरण; गांधी स्मारक संग्रहालय, बैरकपुर, कोलकाता का स्तरोन्नयन; पीटरमैरिट्जबर्ग रेलवे स्टेशन, दक्षिण अफ्रीका में स्थायी प्रकृति की प्रदर्शनियां लगाना और गांधी विरासत स्थलों से संबंधित डेटाबेस तैयार करना। विशेष गांधी विरासत पोर्टल अर्थात www.gandhiheritageportal.org का सृजन किया गया।
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने वर्ष 2018 में थिएटर ओलिम्पिक्स के आठवें संस्करण की मेजबानी की। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने वार्षिक आधार पर भारत रंग महोत्सव, राष्ट्रीय पूर्वोत्तर उत्सव, पूर्वोत्तर राष्ट्रीय प्रागज्योतिष उत्सव का भी आयोजन किया।
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 01.08.2018 को 'सेवा भोज योजना' और 15.10.2018 को 'संबद्ध सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता' नामक नई स्कीमों की शुरुआत की है।
- 'कला संस्कृति विकास योजना (केएसवीवाई)' नामक केन्द्रीय क्षेत्रक स्कीम के विभिन्न स्कीम घटकों के अंतर्गत वर्चुअल/ऑनलाइन माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम/कार्यकलाप आयोजित करने हेतु दिशानिर्देश जारी किए गए ताकि वर्तमान संकट की स्थिति पर काबू पाने के लिए वित्तीय सहायता जारी रखी जा सके।
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन (एनएमसीएम) ने देश में सांस्कृतिक जागरूकता के साथ-साथ प्रतिभा खोज की शुरूआत की। गोवर्धन, शिमोगा, थानेसर, चौरी-चौरा और सरायकेला में 05 राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। एक सुदृढ़ पोर्टल और ऐप बनाने पर मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया।

- लाल किला परिसर में 'शिक्षा, अनुभव और आर्थिक मूल्यवर्धन' अधिदेश के साथ एक आत्मनिर्भर भारत डिजाइन केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव है जो भारत के जीआई उत्पादों को आत्मनिर्भर भारत की सफलता की कहानियों के रूप में उजागर करेगा।

- माननीय प्रधानमंत्री ने 23 जनवरी, 2021 को विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कोलकाता में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती के वर्ष भर चलने वाले समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रत्येक वर्ष 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के रूप में घोषित करने के लिए एक राजपत्र अधिसूचना जारी की गई थी।
- विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (वीएमएच), कोलकाता ने 'निर्भीक सुभाष'- 'एक मल्टी मीडिया प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जो नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती के अवसर पर लगाई गई एक स्थायी प्रदर्शनी थी, नेताजी पर 3डी प्रोजेक्शन मैपिंग शो, 23 जनवरी, 2021 को माननीय संस्कृति मंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 'लैटर्स ऑफ नेताजी' पुस्तक का विमोचन और स्मारक सिक्के का लोकार्पण और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की स्मृति में डाक टिकट जारी किया गया।
- माननीय प्रधानमंत्री ने एनजीएमए, दिल्ली द्वारा 23 जनवरी, 2021 को स्वतंत्रता के लिए नेताजी के महान संग्राम के संबंध में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
- भारत के माननीय उप राष्ट्रपति ने माननीय प्रधानमंत्री के साथ महात्मा गांधी के 73वें शहीद दिवस की स्मृति में 30 जनवरी, 2021 को गांधीजी के शहीद स्थल, गांधी स्मृति पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की।
- माननीय प्रधानमंत्री ऐतिहासिक दांडी यात्रा की 91वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव पर 12 मार्च, 2021 को साबरमती, अहमदाबाद से 25 दिवसीय - 386 किलोमीटर की प्रतीकात्मक 'दांडी यात्रा' की शुरुआत की।
- माननीय प्रधानमंत्री ने साबरमती आश्रम से 12 मार्च, 2021 को 'आजादी का अमृत महोत्सव' का शुभारंभ किया जो प्रगतिशील भारत और इसकी जनता, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास के 75 वर्षों का समारोह मनाने के लिए हमारी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ तक महोत्सव मनाए जाने के लिए 75 सप्ताह पहले शुरू की गई।
- बुद्ध पूर्णिमा दिवस 2015 से मनाया जा रहा है। 7 मई, 2020 और 26 मई, 2021 को वर्चुअल रूप से वैशाख दिवस समारोह आयोजित किया गया। राष्ट्रपति भवन में 24 जुलाई, 2021 को आषाढ़ पूर्णिमा-धर्मचक्र वैश्विक समारोह का आयोजन किया गया। भारत के माननीय राष्ट्रपति इस अवसर पर उपस्थिति थे।
- एनजेडसीसी, पटियाला द्वारा 22 से 25 सितम्बर, 2021 के दौरान तुरतुक और संघ राज्य क्षेत्र लद्दाख के निकटवर्ती 4 गांवों में चोरबाट मुक्ति की स्वर्ण जयंती वर्षगांठ मनाई गई।
- कुशीनगर, उत्तर प्रदेश में महापरिनिर्वाण मंदिर में 20 अक्तूबर, 2021 को अभिधम्म दिवस और श्रीलंका से लाए गए पवित्र बौद्ध अवशेष की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

इस कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री उपस्थित थे और इसमें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ के प्रमुख राजदूतों, केन्द्र और राज्य सरकार के अधिकारियों आदि ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

- आजादी का अमृत महोत्सव के भाग के रूप में संगीत नाटक अकादेमी ने वाराणसी में 27 से 29 अक्तूबर, 2021 को 'अमृत स्वरधारा' - नृत्य एवं संगीत का महोत्सव आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय संस्कृति राज्य मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा किया गया।

- माननीय प्रधानमंत्री ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती के अवसर पर इंडिया गेट के निकट मंडप में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के होलोग्राम का उद्घाटन किया। उन्होंने घोषणा की कि अगले छह माह के भीतर इस मंडप में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की ग्रेनाइट की प्रतिमा स्थापित की जाएगी।

- संस्कृति मंत्रालय द्वारा 26 जनवरी, 2022 की गणतंत्र दिवस परेड के दौरान श्री अरबिन्दो की 150वीं जयंती से संबंधित झांकी प्रदर्शित की गई।

- 'राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर, माननीय प्रधानमंत्री द्वारा मुख्य भाषण प्रस्तुत किया गया। एनएसएस और एनवाईकेएस द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। आर. के. मिशन द्वारा इस अवसर पर अखिल भारतीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

- संस्कृति मंत्रालय ने जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में 16 मई, 2022 को अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबी) के सहयोग से वैशाख बुद्ध पूर्णिमा दिवस मनाया। माननीय प्रधानमंत्री ने लुम्बिनी में आदरणीय भिक्षुओं को संबोधित किया और समारोह के दौरान इसका सीधा प्रसारण किया गया।

- 14 जून, 2022 को मंगोलियाई बुद्ध दिवस के अवसर पर भगवान बुद्ध के चार पवित्र कपिलवस्तु पुरावशेष 25 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ 11 दिवसीय प्रदर्शनी के लिए मंगोलिया भेजे गए। इस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विधि और न्याय मंत्री, श्री किरेन रिजीजू ने किया जो पवित्र अवशेषों के साथ थे।

- धर्मचक्रप्रवर्तन दिवस 13 जुलाई, 2022 को सारनाथ, वाराणसी में मनाया गया।